प्रश्न-पत्र ब्लूप्रिन्ट
BLUE PRINT OF QUESTION PAPER

कक्षा :– IX   परीक्षा : हाईस्कूल   पूर्णांक :– 100

विषय :– सामाजिक विज्ञान   समय : 3 घण्टे

स. क्र.	इकाई	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			1 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	
1.	पर्यावरण	08	2	–	–	1	1
2.	भारत स्थिति, प्राकृतिक विभाग	04	–	1	–	–	1
3.	जलवायु एवं अपवाह तंत्र	04	4	–	–	–	–
4.	प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन	04	4	–	–	–	–
5.	जनसंख्या	05	1	1	–	–	1
6.	मानचित्र पठन एवं अकंन	05	–	–	1	–	1
7.	प्राचीन भारत	10	4	–	–	1	1
8.	मध्यकालीन भारत	10	1	1	1	–	2
9.	प्रमुख सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ	10	1	1	1	–	2
10.	प्रजातंत्र की अवधारणा	06	1	–	1	–	1
11.	निर्वाचन	07	2	–	1	–	1
12.	नागरिकों के संवैधानिक अधिकार एवं कर्त्तव्य	07	2	–	1	–	1
13.	ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का विकास	06	2	1	–	–	1
14.	भारत के समक्ष आर्थिक चुनौतियाँ	08	–	2	–	–	2
15.	खाद्यान्न सुरक्षा	06	1	–	1	–	1
	योग =	**100**	**(25) = 5**	**07**	**07**	**02**	**16+5=21**

निर्देश :– वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रश्नपत्र के प्रारंभ में दिये जायेगे।

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होगें जिसके अन्तर्गत जोड़ी बनाना, एक शब्द या एक वाक्य वाले प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति, तथा सत्य असत्य का चयन आदि के प्रश्न होगें। प्रत्येक प्रश्न में 5 अंक निर्धारित है।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जाये। यह विकल्प समान इकाई से तथा यथा संभव समान कठिनाई स्तर वाले होने चाहिए।
3. कठिनाई स्तर – 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न

कक्षा नवमीं

विषय : सामाजिक विज्ञान

3 घण्टे **आदर्श प्रश्न–पत्र 2007** पूर्णांक 100

विशेष : सभी प्रश्न अनिवार्य है :

प्र. 1. सही विकल्प चुनिये : 5

क. शोर नापने की इकाई :

1. सेन्टीमीटर।
2. डेसीबल।
3. सेल्सियस।
4. मिलीबार।

ख. ब्रहमपुत्र नदी को तिब्बत में किस नाम से जाना जाता है :

1. धनश्री।
2. दिबीग।
3. मेघना।
4. सांगपो।

ग. साधारण वर्षा वाला क्षेत्र है :

1. केरल।
2. गोवा।
3. असम।
4. इनमे से कोई नहीं।

घ. 'काटो और जलाओ' का संबंध है :

1. अतिखनन से।
2. बांध निर्माण से।
3. पर्यटन व तीर्थ यात्रा से।
4. स्थान्तरी कृषिसे।

ड़. मानसून के आने से पूर्व प्रायद्वीपीय पठार में होने वाली वर्षा कहलाती है :

1. व्यापारिक वर्षा।

2. मानसूनी वर्षा।

3. आम्रवृष्टि।

4. जेट स्ट्रीम।

प्र. 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये : **5**

1. अल्प वर्षा वाले क्षेत्रो में औसत वर्षा .... से. मी. वार्षिक से कम रहती है।

2. सबसे कम वन .... राज्य में है।

3. भारत के तटवर्ती क्षेत्रो में .... नामक वनस्पति पाई जाती है।

4. ....पादक फोड़ा व दमा रोग के लिये उपयोगी है।

5. .... वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने का कार्यक्रम है।

प्र. 3. सही जोड़ियां बनाइये : **5**

	क	ख
1.	विश्व जनसंख्या दिवस	महात्मा बुद्ध
2.	बौद्ध धर्म के संस्थापक	मेगस्थनीज
3.	चन्द्र गुप्त के दरबार में राजदूत	11 जुलाई
4.	सिकन्दर की मृत्यु	मुद्राराक्षस
5.	विशाखदत्त	332 ई. पू.

प्र. 4. सत्य/असत्य कारण लिखिये : **5**

(अ) चोल प्रशासन में मंत्री राज्य की सर्वोच्च शक्ति था। ( )

(आ) वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रंध ऋग्वेद है। ( )

(इ) अरस्तू ने प्रजातंत्र को मूर्खो का शासन कहा है। ( )

(ई) नागरिको का प्रतिनिधि चुनने का अधिकार माताधिकार कहलाता है। ( )

(उ) तेलगू, देशम पार्टी एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल है। ( )

प्र. 5. एक शब्द में उत्तर लिखिये : **5**

(1) हमें संविधान द्वारा कितने मूलअधिकार प्राप्त है ? ....

(2) संविधान के अनुछेद 29 व 30 में भारत के नागरिकों को यह अधिकार प्राप्त है ? ....

(3) इस अर्थव्यवस्था में संसाधनों पर निजी नियंत्रण होता है ? ....

(4) विनिमय की वह प्रणाली जिसमें वस्तु के बदले वस्तु या सेवा का प्रत्यक्ष आदान प्रदान होता था ? ....

(5) ज्वार बाजरा और मक्का किस अनाज की श्रेणी में आते हैं ? ....

प्र. 6. पूर्वी व पश्चिमी तटीय मैदान में अन्तर स्पष्ट कीजिये ? 4

अथवा

बागर व खादर भूमि में क्या अन्तर है ? समझाइये।

प्र. 7. 'शिक्षा का अभाव' जनसंख्या वृद्धि का एक मुख्य कारण है ? समझाइये। 4

प्र. 8. अलाउद्दीन की बाजार व्यवस्था क्या थी ? समझाइये। 4

अथवा

विजयनगर का प्रथम शासक कौन था ? इसके बारे में आप क्या जानतेहैं ?

प्र. 9. गुप्तकालीन मंदिरो की विशेषताएं बताइये। 4

अथवा

मुगलकाल में साहितय का विकास सर्वाधिक रहा ? इस कथन को समझाइये ?

प्र. 10. एक आदर्श गांव में प्रशासनिक व्यवस्था कैसी होनी चाहिये ? अपने विचार व्यक्त कीजिये ? 4

अथवा

जनसंख्या का गांव से शहरकी ओर क्यों पलायन होने लगा है ? बताते हुये रोजगार गांरटी अधिनियम को समझाइये ?

प्र. 11. भारत में गरीबी निवारण के प्रमुख कायक्रमो को सक्षेप में लिखिये ? 4

अथवा

गरीबी को मापने हेतु कौन से मापदण्ड है ? बताइये।

प्र. 12. भारत में कागज उद्योग की स्थिति समझाइये ? 4

अथवा

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग भारत का सबसे तेज बढ़ता हुआ उद्योग है ? समझाइये।

प्र. 13. भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये : 5

(1) सरदार सरोवर बांध

(2) कावेरी नदी

(3) अन्नाईमुदी

(4) जयपुर

(5) सुन्दरवन

अथवा

(1) सारिस्का

(2) कर्क रेखा

(3) रांची

(4) महाबलेश्वर

(5) भांखड़ा नागल बांध।

प्र. 14. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण लिखिये। **5**

अथवा

महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ? लिखिये।

प्र. 15. चित्रकला का इतिहास में बहुत महत्त्व है ? सिन्धु सभ्यता के निवासियो ने किस तरह से चित्रकला की थी ? समझाइये। **5**

अथवा

संगीत की उन्नति सल्तनतकाल में कैसे हुई ? समझाइये।

प्र. 16. प्रजातंत्र के लिये संविधान क्यों आवश्यक है ? स्पष्ट किजिये। **5**

अथवा

प्रजातंत्र के गुणों का वर्णन कीजिये।

प्र. 17. निर्वाचन प्रक्रिया में मतगणना एक महत्वपूर्ण चरण है ? समझाइये। **5**

अथवा

भारतीय चुनाव प्रणाली के कोई पांच प्रमुख दोषो का वर्णन कीजिये ।

प्र. 18. नीति निर्देशक तत्व और मौलिक अधिकारों में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिये **5**

अथवा

मौलिक अधिकार और मौलिक कर्त्तवय एक ही सिक्के के दो पहलू है ? उक्त कथन को समझाइये।

प्र. 19. खाधान्न सुरक्षा के लिये सरकार द्वारा किये गये प्रयासो को संक्षिप्त में समझाइये। 5

अथवा

खाद्य सुरक्षा में सहकारिता की क्या भूमिका है ? स्पष्ट कीजिये।

प्र. 20. साइलेण्ट वैली पर टिप्पणी लिखिये 6

अथवा

उद्योगों का केन्द्रीयकरण पर्यावरण के लिये गंभीर खतरा है ? उदाहरण सहित लिखिये।

प्र. 21. अशोक के 'धम्म' को समझाते हुये उसके धर्म की विशेषताएं लिखिये। 6

अथवा

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन प्रबंध का वर्णन लिखिये।

कक्षा नवमीं
विषय : सामाजिक विज्ञान
आदर्श उत्तर

उ. 1. सही विकल्प चुनिये :

(क) डेसीबल।

(ख) सांगपो।

(ग) इनमें से कोई नहीं।

(घ) स्थान्तरी कृषि से।

(ड़) आम्रवृष्टि।

उ. 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये :

(1) 50 से. मी.।

(2) हरियाणा।

(3) मैग्रोव।

(4) कचनार।

(5) सामाजिक वानिकी।

उ. 3. सही जोड़िया बनाइये :

	क	ख
(1)	विश्व जनसंख्या दिवस	11 जुलाई
(2)	बौद्ध धर्म के संस्थापक	महात्मा बुद्ध
(3)	चन्द्रगुप्त के दरबार में राजदूत	मेगस्थनीज
(4)	सिकन्दर की मृत्यु	332 ई. पू.
(5)	विशाखदत्त	मुद्राराक्षस

उ. 4. सत्य/असत्य कथन लिखिये –

(अ) असत्य।

(आ) सत्य।

(इ) असत्य।

(ई) सत्य।

(उ) असत्य।

उ. 5. एक शब्द में उत्तर लिखिये :

(1) छः

(2) संस्कृति एंव शिक्षा संबंधी अधिकार।

(3) पूंजीवाद।

(4) वस्तु विनिमय प्रणाली।

(5) मोटा अनाज।

उ. 6.

पूर्वी तटीय मैदान	पश्चिमी तटीय मैदान
(1) इनका विस्तार बंगाल की खाड़ी के तट के सहारे है।	(1) इनका विस्तार अरब सागर के सहारे है।
(2) इस मैदान की चौड़ाई अधिक है।	(2) यह मैदान सकरा है।
(3) इसका निर्माण महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों द्वारा निक्षेप से हुआ है।	(3) इसका निमार्ण छोटी पर तेज गति से बहने वाली नदियों से हुआ है।
(4) इस मैदान के तटीय भाग में डेल्टा विकसित है।	(4) इस तट पर डेल्टा नहीं है।
(5) उत्तरी भाग के तट को उत्तरी सरकार और दक्षिणी भाग को कारोमण्डल तट कहते है।	(5) उत्तरी भाग में कोंकण और गोवा के दक्षिणी में मालाबार तटीय मैदान है।

अथवा

बागर भूमि	खादर भूमि
(1) यह उत्तरी मैदान की उच्च्य भूमि है जो प्राचीन निक्षेपो से निर्मित है इसमें कंकड़ भी पाये जाते हैं।	(1) यह उत्तरी भारत के मैदानो की निचली भूमि है। इनमें कांप मिट्टी पाई जाती है।
(2) बाढ़ का जल इन तक नहीं पहुंचता।	(2) यह भूमि बाढ़ जल में डूब जाती है।
(3) इसमें जल–तल की गहराई अधिक होती है।	(3) इसमें भूमिगत जलस्तर ऊंचा होता है।
(4) इसका विस्तार मुख्य रुप से पंजाब और उत्तर प्रदेश के मैदानी भागो में है।	(4) पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार एंव बंगाल में इसका विस्तार है।

उ. 7. अशिक्षा अन्ध विश्वास को जन्म देती है। अधिकांश आशीक्षित लोगों का विश्वास है कि सन्तान भगवान की देन है ऐसा मानकर सन्तान पैदा करते जाते है और इस प्रकार जनसंख्या बढ़ती जाती है।

पुत्र प्राप्ति की इच्छा भी परिवार में कई बच्चों के होने के लिये उत्तरदायी है निम्न वर्ग परिवार कल्याण कार्यक्रम को अपनाने में संकोच करते है। देश में महिला साक्षरता का प्रतिशत भी कम है। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए महिलाएं अहम भूमिका निभा सकती है। बशर्ते उन्हें साक्षर बनाने के प्रयास अधिक से अधिक किये जायें। शिक्षित महिला ही परिवार को नियोजित कर सकती है। उन्हें परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाने की लिये प्रेरित किया जाना जरुरी है।

अथवा

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 के अनुसरण में **राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग** की स्थापना की गई है। प्रधानमंत्री इस आयोग के अध्यक्ष है। और सभी राज्य एंव केन्द्र शासित प्रदेशो के मुख्यमंत्री प्रशासक तथा संबंधित केन्द्रीय मन्त्रालयो एवं विभागों के प्रभारी केन्द्रीय मंत्री, प्रतिष्ठित जनसांख्यिकीविद् जनस्वास्थ्य व्यावसायिक एंव गैर सरकारी संगठन इस आयोग के सदस्य है। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 का अनुसंरण करते हुये राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की ही तरह राज्य जनसंख्या आयोग का भी गठन कर लिया गया है। इसके अध्यक्ष उस राज्य के मुख्यमंत्री है।

उ. 8. अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी विशाल सेना को कम मूल्यो पर वस्तूए उपलब्ध कराने के लिये दिल्ली में **बाजार नियंत्रण व्यवस्था** लागू की जिसका दिल्ली की जनता को लाभ मिला। उसने राशनिंग व्यवस्था भी लागू की। मौसम के आकस्मिक परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए उसने शासकीय अन्न भंडार बनाये थे। उसने वस्तुओ के मूल्यो का निर्धारण मनमाने ढंग से न कर उत्पादन लागत के अनुसार करवाया था। बरनी ने अपने ग्रंथ 'तारीख–ए–फिरोजाशाही' में बाजार नियंत्रण व्यवस्था का विस्तृत विवरण व वस्तुओ के मूल्य की सूची दी है।

अथवा

अलाउद्दीन खिलजी के काल में दक्षिण भारत में हिन्दू धर्म एंव संस्कृति पर गहरा आधात हुआ था धीरे–धीरे हिन्दुओ ने अपनी आत्मरक्षा, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा के लिये विरोध प्रदर्शित करना शुरु किया। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के पीछे दक्षिण भारत में हिन्दू पुर्नजागरण की भावना मुख्य रूप से थी। इसका श्रेय विजयनगर के प्रथम शासक हरिहर को जाता है हरिहर ने अपने भाई बुक्का की सहायता से शासन किया। तथा राज्य की सीमाओ

का विस्तार किया। उसने थोड़े समय में ही राज्य को उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर दक्षिण में कावेरी नदी तक और पूर्व और पश्चिम में समुद्र तट तक विस्तृत कर दिया। उसने एक सशक्त शासन स्थापित किया।

उ. 9. गुप्तकालीन मंदिरो की विशेषताएं :

(1) मंदिर ईट तथा पत्थरो आदि से बनाये जाते थे।

(2) मंदिरो की छते सपाट थी। सबसे पहले देवगढ़(झांसी उ.प्र.) के दशावतार मंदिर में शिखर का निर्माण हुआ था।

(3) म.प्र. में सांची का मंदिर उ.प्र. में भीतरगांव तथा देवगढ़ के मंदिर आदि उदाहरण है।

(4) अजनता की गुफा 16,17,19 गुप्त कालीन मानी जाती है।

(5) इस काल में विष्णु की दशावतार प्रतिमाओ व ब्राहमण धर्म की अन्य प्रतिमाओ का अंकन शुरु हुआ।

(6) अजन्ता की गुफाओ में मुख्यतः बुद्ध और बोधिंसत्व के चित्र है।

(7) गुप्तकालीन मूर्तियो में आकृति भाव भगिमा मुद्रा तथा निखार पर मूर्तिकार ने बल दिया जिससे वे अधिक सजीव व जीवंत होने लगी थी।

अथवा

मुगलकाल में वर्तमान में प्रचलित भाषाओं में से कई भाषाओं का विकास हुआ कबीर जायसी सूरदास तुलसीदास आदि की रचनाओं का हिन्दी में विशेष महत्व है। मीरा ने राजस्थानी व मैथली शब्दो का प्रयोग किया।बंगाल में रामायण और महाभारत का संस्कृत से बंगाली भाषा में अनुवाद किया गया। महाराष्ट्र में नामदेव तथा एकनाथ मराठी के प्रसिद्ध संत और साहित्यकार हुये। मुगलकाल में शासक साहित्यप्रेमी थे। सभी ने विद्वानो को संरक्षण प्रदान किया था। इस काल में फारसी तथा तुर्की भाषा में रचनाये लिखी थी। उर्दू साहित्य के इतिहास का विकास मुगल काल में सर्वाधिक रहा। अकबर ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथो का अनुवाद फारसी भाषा में करवाया था।

उ. 10. एक आदर्श गांव में **पंचायत की व्यवस्था** होना चाहिये। **ग्राम पंचायत के सदस्य व सरपंच गांव के विकास के प्रति जागरुक** एंव **सक्रिय** होने चाहिये। जिससे गांवो में स्वच्छता पेयजल स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाएं ग्राम वासियो को प्राप्त हो सके। ग्राम पंचायत में प्रशासीय पारदर्शिता बढ़ानी चाहिये। गांव के हर कार्यालय जिसमें **ग्राम सचिवालय,**

पंचायत भवन, आंगवनाड़ी, सहकारी समिति, शाला, भवन आदि के कर्मचारियों को अपने दफ्तर को पूरी तरह से स्वच्छ रखने के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये। इन सभी भवनो पर स्थाई रुप से उनका नाम लिखा होना चाहिये। गांवो में स्व.सहायता समूहो के निर्माण के प्रति भी ग्रामीणो को जागरुक करके बचत की आदत डालना चाहिये।

अथवा

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कई परिवर्तन दिखाई देने लगे है। किन्तु शहरी क्षेत्रो की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र अभी भी पिछड़े हुये है। गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी बुनियादी सुविधाओ की कमी आदि अनेक कारणों से ग्रामीण जनता शहरो की ओर पलायन कर रही है। 1951 में कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 82.7 प्रतिशत था, जो वर्ष 2001 में 72.2 प्रतिशत रह गया जबकि शहरी जनसंख्या का प्रतिशत 1951 में 17.3 था जो 2001 में बढ़कर 27.8 हो गया। पंचवर्षीय योजनाओ के द्वारा देश का आर्थिक विकास तेजी से हुआ है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

उ. 11. भारत में गरीबी की समस्या के समाधान के प्रति भारतीय योजनाकार शुरु से ही चिन्तित रहे हैं इस दिशा में जहां एक और आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने का प्रयास किया गया है वही दूसरी ओर गरीबी विरोधी उन्मूलन कार्यक्रमो को अपनाया गया। ग्रामीण क्षेत्रो के लोगो की आवश्यकताये पूरी करने के लिये सरकार ने अनेक परियोजनाएं शुरु की है गरीबी निवारण के प्रमुख कार्यक्रम निम्नलिखित है।

(1) स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना।

(2) स्वर्ण जंयती शहरी रोजगार योजना।

(3) प्रधानमंत्री रोजगार योजना।

(4) ग्रामीण समृद्धि योजना।

(5) **रोजगार गांरटी अधिनियम**—इसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक निर्माण कार्यक्रम के अधीन ग्रामीण शहरी गरीब तथा निम्न मध्यम वर्ग के परिवार के एक वयस्क व्यक्ति को कम से कम 100 दिन रोजगार उपलब्ध कराना है। यदि निश्चित समय में काम उपलब्ध नहीं कराया जायेगा तो संबंधित व्यक्ति को बेराजगारी भत्ता प्रदान किया जायेगा।

अथवा

सामान्यतः गरीबी को मापने के लिये दो मानदंण्डो का प्रयोग किया जाता है।

(1) निरपेक्ष गरीबी। (2) सापेक्ष गरीबी।

(1) **निरपेक्ष गरीबी**—से अभिप्राय है कि मानव की मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ती हेतू पर्याप्त वस्तुओ एंव सेवाओं को जुटा पाने में असमर्थता से है इसमे वे सभी व्यक्ति सम्मिलित किये जाते हैं जो गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करते है।

(2) **सापेक्ष गरीबी**—सापेक्ष गरीबी से अभिप्राय आय की असमानताओं से है सापेक्ष गरीबी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक असमानता अथवा क्षेत्रीय असमानताओ का बोध कराती है। इसका आकलन समय–समय पर भारतवर्ष में गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या का राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन (N.S.S.O.) द्वारा करवाया जाता है।

उ. 12. भारत में कागज उद्योग– भारत में आधुनिक ढंग का पहला कारखाना 1870 में कोलकाता के निकट बाली नामक स्थान पर लगाया गया। वर्तमान में सार्वजनिक क्षेत्र में कागज के कई कारखाने हैं। जिनमे प्रमुख है नेशनल न्यूज प्रिन्ट एण्ड पेपर मिल लिमिटेड (नेपानगर म.प्र) तथा सिक्योरिटी पेपर मिल (होशंगाबाद) इस समय देश में कागज कारखाने की संख्या लगभग 515 हैं देश में कागज का उत्पादन लघ्यु मध्यम एंव वृहद सभी प्रकार की इकाइयो द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान में कुल उत्पादन में लघु और मध्यम इकाइयो का योगदान 50 प्रतिशत है। विश्व में कागज उत्पादन में भारत का स्थान 20वा है भारत में कागज के प्रमुख उत्पादक राज्य आध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक, म.प्र., गुजरात, तमिलनाडु, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार तथा केरल है।

अथवा

सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग से तात्पर्य उस उद्योग से है जिसमें कम्प्यूटर और उसके सहायक उपकरणो की सहायता से ज्ञान का प्रसार किया जाता है। इसके अंतर्गत कम्प्यूटर, संचार प्रौद्योगिकी और संबंधित साफ्टवेयर को शामिल किया जाता है। इसे अन्तर्गत इस सम्पूर्ण व्यवस्था को शामिल किया जाता है। जिसके द्वारा संचार माध्यम और उपकरणें की सहायता से सूचना पहुंचाई जाती है यह ज्ञान आधारित उद्योग है। भारत में इस उद्योग का विकास हाल ही में हुआ है परन्तु यह भारत में तेजी से विकसित हो रहा है। भारत में इस उद्योग का विकास 1994 की अन्तर्राष्ट्रीय संधि के पश्चात् हुआ। इस उद्योग द्वारा 1994–95 में 6345 करोड़ रुपये की आय प्राप्त हुई जो 2002–03 में बढ़कर 79, 337 करोड़ रुपये हो गई। इससे ज्ञात होता है कि यह उद्योग भारत का तेजी से बढ़ता हुआ उद्योग है।

उ. 13.

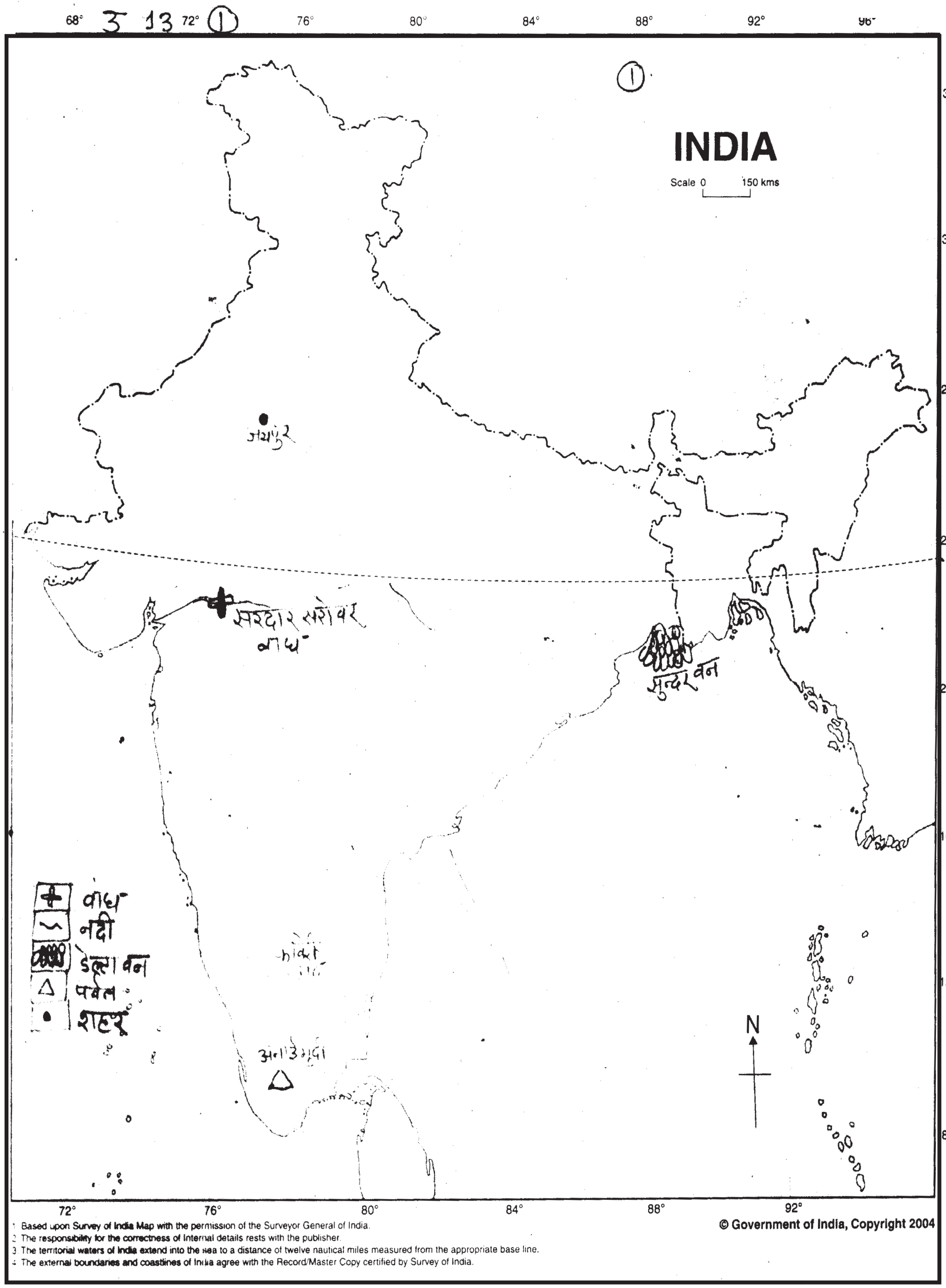
INDIA
Scale 0 150 kms
68° 72° 76° 80° 84° 88° 92° 96°
36° 32° 28° 24° 20° 16° 12° 8°
N
जयपुर
सरदार सरोवर बांध
सुन्दरबन
अनाईमुडी
बांध
नदी
डेल्टा वन
पर्वत
शहर
1 Based upon Survey of India Map with the permission of the Surveyor General of India.
2 The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher.
3 The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
4 The external boundaries and coastlines of India agree with the Record/Master Copy certified by Survey of India.
© Government of India, Copyright 2004

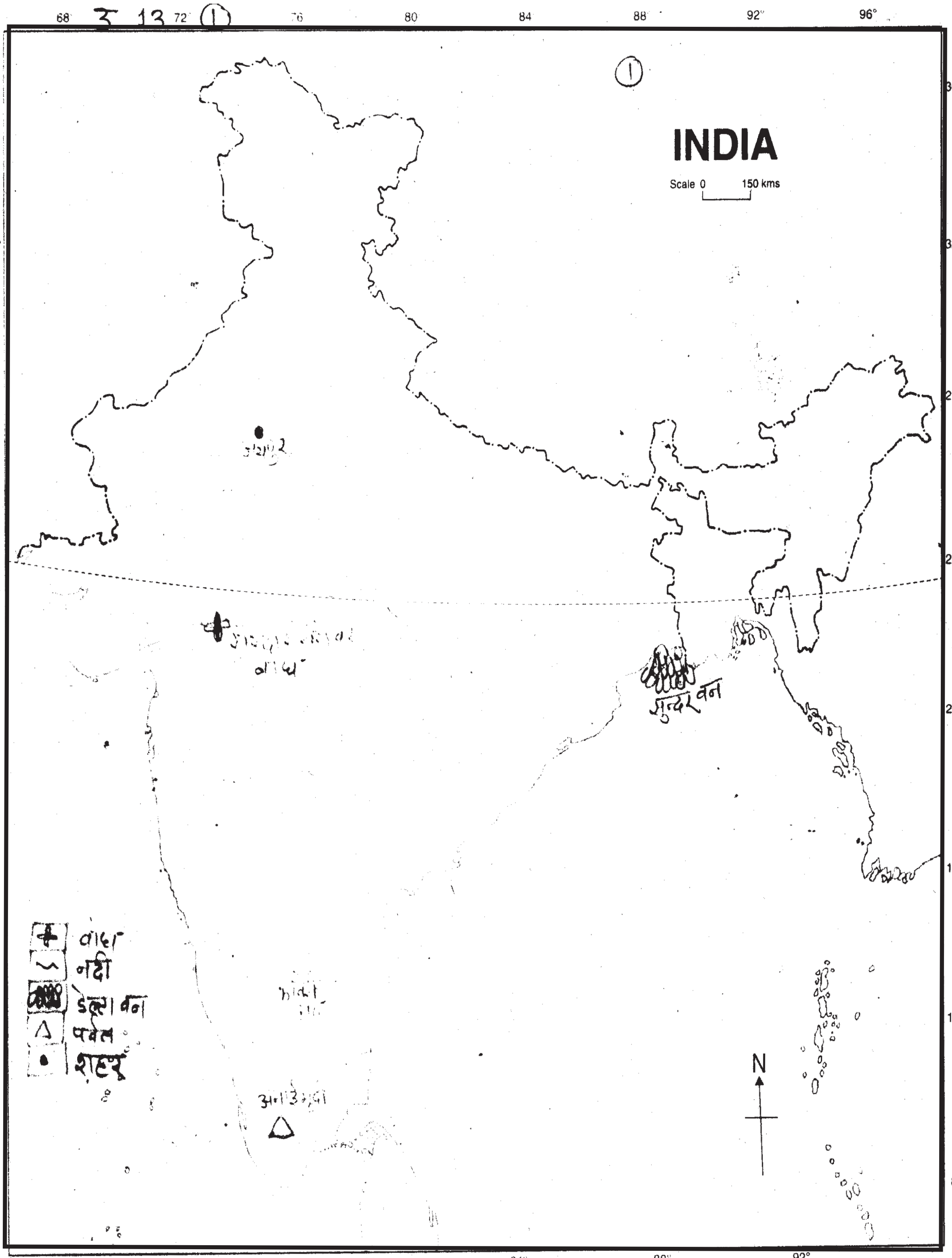

1. Based upon Survey of India Map with the permission of the Surveyor General of India.
2. The responsibility for the correctness of internal details rests with the publisher.
3. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
4. The external boundaries and coastlines of India agree with the Record Master Copy certified by Survey of India.

© Government of India, Copyright 2004

उ. 14. बाबर द्वारा जिस मुगल सत्ता की नींव डाली गयी उसका पतन औरंगजेब के काल से दिखाई देने लगा था तथापि 1707 ई. में उसकी मृत्यु के साथ ही मुगल सत्ता का पतन तीव्र गति से आरम्भ हो गया। इस विशाल साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण है।

(1) **औरंगजेब का साम्राज्य नीतियां व युद्ध**—औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता हिन्दू विरोधी–नीति प्रमुख कारणों में से एक थी। उसने हिन्दुओ का धार्मिक उत्पीड़न किया जिससे राजपूतों का सहयोग मिलना बंद हो गया। मराठों और जाटों ने उसके साम्राज्य के पतन का कारण बनी

(2) **करों की अधिकता**—मुगल शासको ने अपने सुख सुविधाओं तथा युद्धों के लिये प्रजा पर भारी–भारी कर लगाये जिनको चुकाना बहुत कठिन हो गया।

(3) **सरदारों एवं राजकुमारों में विद्रोह**—सलीम, खुसरो, शाहजहाँ, औरंगजेब जैसे राज्य सरदारों के के विद्रोहो ने मुगल साम्राज्य की एकता पर कुठारधात किया।

(4) **मुगल शासकों का नैतिक पतन**—प्रारंम्भिक मुगल साम्राज्य के शासक अपने राज्य के प्रति निष्ठावान तथा चरित्रवान थे। किन्तु जहांगीर के बाद मुगल शासक विलासी तथा अकर्मण्य होने लगे ।

(5) **हिन्दू शक्तियों का उंदय**—मराठों जाटो सिक्खों राजपूतो आदि ने अपने को पुनः संगठित किया ओर हिन्दू संस्कृति पर आघात करने वाले मुगल साम्राज्य के विरूद्ध उठ खड़े हुये। निरन्तर युद्ध, स्वेच्छाचारी शासन अयोग्य उत्तराधिकारी धर्म आधारित शासन, सैनिक शक्ति में ह्यास, अमीरो का नैतीक पतन, दलबन्दी आदि कारण मुगल साम्राज्य के पतन में सहायक हुये।

अथवा

राणा सांगा की मृत्यु के बाद मुगल सत्ता का प्रतिरोध महाराणा उदयसिंह (1537–1572 ई) में किया। सिंह की 1572 ई. में मृत्यु के बाद उनका पुत्र राणा प्रताप मेवाड़ का शासक बना। शासक बनने के बाद घर और बाहर की अनेक समस्याओं का उन्हे सामना करना पड़ा था। पिता के साथ उन्होंने जंगलों घाटियों और पहाड़ियों में रहकर कठोर जीवन बिताया। महाराणा प्रताप ने जीवित रहने तक मुगल सत्ता के प्रमुख शासक अकबर को कड़ी चुनौती दी। अकबर ने राणा प्रताप को समझाने के अनेक प्रयास किये मगर उसे सफलता नहीं मिली। अंततः अकबर ने महाराणा प्रताप के साथ युद्ध किया। कई वर्षो तक युद्ध चलता रहा। अकबर अन्त तक महाराणा प्रताप को झुकाने में सफल न हो सका। इस प्रकार महाराणा प्रताप ने अपने देश के प्रति मरते दम तक वीरता और साहस का परिचय दिया व अकबर के अहंकार का मानमर्दन किया।

उ. 15. चित्रकला का विकास मानव के विचारों की अभिव्यक्ति के चित्रात्मक स्वरुप पर आधारित है।

भारतीय चित्रकला की सृमद्ध परम्परा भारतीय दृष्टि की रंग के प्रति संवेदनशीलता की परिचायक है। विभिन्न कालो में चित्रकला का अंकन तात्कालीन समाज के चित्रकारों द्वारा किया गया है। भारत में प्रागैतिहासिक काल से मानव की दृश्य अभिव्यक्ति को पाषाण खण्डों में देखा जा सकता है। भोपाल के निकट भीमबेटिका शैलाश्रय में चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण देखे जा सकते है। **सिन्धु सभ्यता** के निवासियो को चित्रकला का भी ज्ञान था। इसके पर्याप्त प्रमाण मिलते है। यहां से प्राप्त बर्तनो एवं मोहरो पर अनेक चित्र मिलते है। भवनो की दीवारों पर भी चित्रकारी की जाती थी। चित्रो में प्राकृतिक दृश्य एवं जीव जन्तु दोनो के उदाहरण मिलते है। चित्रो में रंगो का प्रयोग भी किया जाता था।

अथवा

सल्तनत काल में नवीन रागों एवं वाद्य यंत्रो से हिन्दुस्तानी संगीत का परिचय हुआ। यद्यपि कुरान में संगीत को वर्जित माना गया है। किन्तु समय–समय पर सुल्तानों, सामंतो, खलीफाओ ने इसे प्रोत्साहित किया है। इस समय का प्रसिद्ध संगीतकार अमीर खुसरो था जिसने संगीत का वर्णन अपनी पुस्तक **नूरह सिपहर** (नव आकाश) में किया। इस पुस्तक में वर्णित है कि भारतीय संगीत से हृदय और आत्मा उद्वेलित हो जाते हैं भारतीय संगीत केवल मनुष्य मात्र को ही प्रभावित नहीं करता यह पशुओं तक को मुग्ध कर देता है। हिरन संगीत से अवाक खड़े रह जाते है। और उनका आसानी से शिकार कर लिया जाता है। **अमीर खुसरो ने भारतीय इरानी संगीत सिद्धांतो के मिश्रण से** कुछ नवीन रागों का आविष्कार किया। कब्वाली का जनक अमीर खुसरो था। तत्कालीन समय में ख्याल तराना आदि संगीत की नई विधाओ के कारण संगीत के रूप में परिवर्तन आया। संगीत मनोरंजन का प्रमुख साधन था।

उ. 16. **प्रजातंत्र के लिये संविधान की आवश्यकता एवं महत्व–**वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सरकार का निर्माण जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं। प्रजातंत्र की मूल मान्यता है कि शासन की शक्तियों पर जनता का नियंत्रण हो। जिससे शासन जनता के हितो के अनुकूल हो सके। जनता के अधिकारों की रक्षा के लिये कानूनो का होना अनिवार्य है। प्रजातंत्र में सामान्य व्यक्तियों को सरकार के गठन की प्रक्रिया व शक्तियों तथा नागरिको के अधिकारों व कर्त्तव्यों का ज्ञान **संविधान के द्वारा सरलता से प्राप्त हो सकता है**।

संविधान को आसानी से बदला जा सके ऐसी व्यवस्था भी होना चाहिये। इस प्रकार प्रजातंत्र की रक्षा के लिये लिखित संविधान का होना आवश्यक है। प्रजातंत्र को इसी कारण से विधि का शासन कहा जाता है, इसमें व्यक्ति या व्यक्ति समूह नहीं वरन कानून सर्वोपरि है जो **लिखित संविधान** में स्पष्ट होता है अतः प्रजातंत्र के लिये संविधान का अत्यधिक महत्व है प्रजातंत्र की सुदृढता के लिये प्रजातांत्रिक परपराओं का भी महत्व है जो लिखित संविधान को लचीलापन देती है।

अथवा

प्रजातंत्र के गुण—

(1) **मानवता के उच्च मुल्यो पर आधारित**—प्रजातंत्र समानता न्याय और भ्रातृत्व जैसे उच्च मूल्यों पर आधारित है इसमें प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का सम्मान करते हुये सभी को समान माना जाता है।

(2) **लोक कल्याण**—प्रजातंत्र में जनप्रतिनिधि एक निशचित समय के लिये जनता द्वारा चुने जाते है इसलिये प्रजातंत्र में शासक जनता के प्रति उत्तरदायी और उनके हितो के प्रति सजग रहता है।

(3) **राजनीतिक शिक्षण**—मताधिकार, भाषण अभिव्यक्ति, संचार माध्यमों के उपयोग की स्वतंत्रता से जनता राजनीति के बारे में जानती है। सभी राजनीतिक दल निरंतर प्रचार द्वारा जनता को राजनीतिक शिक्षा प्रदान करते रहते है।

(4) **राष्ट्रपेम की भावना का विकास**—जनता राजनीतिक दृष्टि से सजग हो जाने के कारण सरकार व राज्य के प्रति एक प्रकार का लगाव अनुभव करती है और इस लगाव के कारण राष्ट्र के प्रति प्रेम व प्रतिवद्वता की भावना जाग्रत होती है।

(5) **हिंसात्मक क्रांति की न्यूनतम व्यवस्था**—प्रजातंत्र शांति और सहिष्णुता का दर्शन है। यह सहमति और समझ पर आधारित है। इसमें विपक्ष को भी अपने बात करने का पूरा अवसर प्राप्त होता है। बहुसंख्यक जनता शासक वर्ग से असंतुष्ट है तो वह उसे सरलता से संवैधानिक उपायो से हटा सकती है जिस कारण हिंसा की कोई सम्भावना नहीं रहती।

उ. 17. **मतगणना**—निर्वाचन प्रक्रिया में मतगणना एक महत्वपूर्ण चरण है निर्धारित तिथि पर सभी मतपेटियों/वोटिंग मशीनों को एकत्र किया जाता है। जिला निर्वाचन अधिकारी की उपस्थिति में मतों को गिना जाता है। अधिकतम मत प्राप्त प्रत्याशी को विजयी निर्वाचित घोषित किया जाता है। निर्वाचित व्यक्ति अपने क्षेत्र का प्रतिनिधि होता है। निर्वाचन परिणाम घोषित होने के उपरांत जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा निर्वाचित प्रत्याशी को विजयी होने का प्रमाण–पत्र दिया जाता है।

निर्वाचन आयोग का उद्देश्य देश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना हैं निर्वाचन के दिन सार्वजनिक अवकाश दिया जाता है। ताकि सभी नागकिो को अपना मत देने का अवसर प्राप्त हो सके। निर्वाचन के दिन उस चुनाव क्षेत्र की शराब की दुकाने बंद रखी जाती है ताकि कोई उम्मीदवार मतदाताओं को प्रलोभन न दे सके। मतदाताओं को कोई डरा धमका न सके इसलिये व्यापक सुरक्षा प्रबन्ध किये जाते है।

अथवा

भारतीय चुनाव प्रणाली के प्रमुख दोष–

(1) **मतदान में पूर्व भागीदारी का अभाव**—अधिकांश मतदाता चुनाव वाले दिन अपना वोट देने नहीं जाते हैं वे सोचते हैं कि इससे मेरा क्या लाभ होगा।

(2) **चुनाव में धन का प्रयोग**—चुनाव में भाग लेने वाले प्रत्याशी बहुत अधिक धन खर्च करते हैं जो चुनाव व्यवस्था के लिये गंभीर समस्या है।

(3) **चुनाव में बाहुबल का प्रयोग**—कई बार कुछ प्रत्याशी हर तरीके से चुनाव जीतना चाहते हैं वे चुनाव में अपराधियों की मदद भी लेते है हिंसा और बल का प्रयोग कर लोगों से डरा धमकाकर वोट देने से रोकते हैं मतदान केन्द्रों पर कब्जा करने जबरदस्ती अवैध मत डलवाने का भी काम करते हैं।

(4) **फर्जी मतदान**—कई बार कुछ व्यक्ति दूसरे के नाम पर वोट डालने चले जातें हैं नाम न होते हुये वोट देने जाना आदि फर्जी मतदान की श्रेणी में आता है।

(5) **निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या**—चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या कभी–2 बहुत अधिक होती है जिससे चुनाव प्रबंध में कठिनाई आती है। मतदाता भी प्रत्याशियों के चुनाव मैदान में होने से भ्रमित होतें है।

उ. 18. **नीति निर्देशक तत्व और मौलिक अधिकारों में अन्तर–**

(1) मौलिक अधिकारों के पीछे कानूनी शक्ति होती है। नीति निर्देशक तत्वों के पीछे जनमत की शक्ति होती है। यदि शासन के किसी कानून से मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होता है तो न्यायालय उसकी रक्षा के लिये उस कानून को अवैध घोषित कर सकता है किन्तु यदि नीति निर्देशक तत्वो के विरुद्ध यदि कोई कानून बनता है तो न्यायालय उसे अवैध घोषित नहीं कर सकता।

(2) मौलिक अधिकार सरकार को कुछ कार्य करने से रोकते हैं जबकि नीति निर्देशक तत्व सरकार को अपने कर्त्तव्य को पूरा करने का निर्देश देते है।

(3) मौलिक अधिकारों का उद्देश्य राजनीतिक प्रजातंत्र की स्थापना है जबकि नीति निर्देशक तत्वो का उद्देश्य आर्थिक सामाजिक प्रजातंत्र की स्थापना है।

(4) मौलिक अधिकार नागरिकों के लिये है, जबकि नीति निर्देशक तत्व सरकार के कर्तव्य हैं। ये सरकार के नीति निर्माण एवं व्यवहार के लिए दिये गये निर्देश है।

अथवा

अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हम अधिकारों की प्राप्ति कर्त्तत्यों की

पूर्ति के बिना नहीं कर सकते। अगर नागरिक अपने मौलिक कर्त्तव्यों को पूरा करेंगे तो उन्हे अपने मूल अधिकारों की प्राप्ति में सरलता होगी। अगर नागरिक कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते तो अव्यवस्था होगी और वातावरण अशान्त होगा।

मौलिक कर्त्तव्यों की पूर्ति स्वस्थ सामाजिक वातावरणं का निर्माण करती है। संविधान में मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्त्तव्यों के बीच कोई कानूनी सम्बन्ध निश्चित नहीं किया गया है। इनकी अवहेलना करने पर दण्ड की व्यवस्था नहीं है परन्तु हमारा राष्ट्र के प्रति यह दायित्व है। मौलिक कर्त्तव्य देश की सांस्कृतिक विरासत, राष्ट्रीय संपत्ति, व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रगति देश की सुरक्षा व्यवस्था आदि को सुदृढ बनाने पर्यावरण संरक्षित रखने राष्ट्रीय आदर्शो का आदर करने एवं सामाजिक समरसता बनाये रखने की प्रेरणाएं है।

उ. 19. खाद्यान्न सुरक्षा सार्वजनिकं वितरण प्रणाली, शासकीय सर्तकता और खाद्यान्न सुरक्षा के खतरे की स्थिति में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही पर निर्भर करती है। खाद्यान्न संकट के समय एवं सामान्य परिस्थितियों में गरीबों तथा अन्य लोगों को खाद्यान्न उचित कीमत पर उपलब्ध कराने के लिये खाद्य सुरक्षा प्रणाली का विकास किया गया है।

(1) **खाद्यान्न वृद्धि के प्रयास**—खाद्यान्न सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है कि देश में पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न का उत्पादन हो। हरित क्रांति के अन्तर्गत कृषि का यन्त्रीकरण, उन्नत बीजों का प्रयोग, उर्वरकों का प्रयोग, कीटनाशकों के प्रयोग, सिचाई सुविधाओं का विस्तार किया गया।

(2) **न्यूनतम समर्थन मूल्य**—इसके अन्तर्गत जब खाद्यान्नों का बाजार भाव सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य से नीचे चला जाता है तो सरकार स्वंय घोषित समर्थन मूल्य पर खाद्यान्न खरीदने लगती है। इससे किसान अधिक से अधिक उत्पादन करने के लिये प्रेरित होते है।

(3) **बफर स्टाक**—बफर स्टाक भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से सरकार द्वारा अधिप्राप्त आनज गेहूं और चावल का भण्डार है।

(4) **सार्वपनिक वितरण प्रणाली**—इसका संचालन केन्द्र तथा राज्य सरकारें मिल कर करती है। केन्द्र द्वारा राज्यों को खाद्यान्न एवं अन्य वस्तुओं का आवंटन किया जाता है और विक्रय मूल्य भी तय किया जाता है।

अथवा

भारत में खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराने में सहकारिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कार्य उपभोक्ता सहकारी समितियों द्वारा निर्धन लोगों के लिये खाद्यान्न बिक्री हेतु राशन की दुकान खोलकर किया जाता है। भारत में उपभोक्ता सहकारिता के राष्ट्रीय, राज्य, जिलों व ग्राम स्तर पर अलग–अलग व्यवस्थाए है। 30 राज्य सहकारी उपभोक्ता संगठन इस परिसंघ के साथ जुड़े हैं। शहरी और उपनगरीय क्षेत्रों में करीब 37,226 खुदरा बिक्री केन्द्रों का

संचालन उपभोक्ता सहकारी समितियों द्वारा किया जा रहा है। ताकि उपभोक्ताओं की जरुरतें पूरी की जा सकें।

सरकार ने जुलाई 2000 में सर्वप्रिय नाम की एक योजना प्रारम्भ की। इस योजना में रोजमर्रा इस्तेमाल की चुनी हुई वस्तुओं का वितरण उपभोक्ताताओं की मौजूदा सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खुदरा बिक्री केन्द्रों और राज्य उपभोक्ता सहकारी परिसंघ के खुदरा बिक्री केन्द्रों, राज्य नागरिक आपूर्ति निगमों और राज्यों की उपभोता सहकारी समितियों के माध्यम से किया जाता है। सरकार भारतीय खाद्य निगम द्वारा अधिप्राप्त अनाज को **राशन की दुकान** के माध्यम से समाज के गरीब वर्गों में वितरित करती है। राशन की दुकान पर सभी वस्तुयें बाजार कीमत से कम कीमत पर बेची जाती है। आज देश भर में लगभग 4.6 लाख राशन की दुकानें हैं। इस तरह सहकारिता का उद्देश्य एक–दूसरे का शोषण रोकने की भावना रखते हुये परस्पर सहयोग से मिलजुलकर कार्यकरना है।

उ. 20. **साइलेण्ट वैली**—साइलेण्ट वैली केरल का एक छोटा वन क्षेत्र है। यह पश्चिमी घाट पर नीलगिरि के दक्षिण–पश्चिमी ढाल पर स्थित है। दुर्गम पहाड़ी रास्तों के कारण यह जनसंख्या विहीन क्षेत्र है। इस घाटी में दुर्लभ एवं मूल्यवान वनस्पति एवं जन्तुओं का भंडार है। **कुन्नीपूजा नदी** साइलेण्ट वैली के बीच से होकर बहती है।

केरल राज्य विद्युत बोर्ड कुन्तीपूजा नदी पर बांध बनाकर जल विद्युत पैदा करना चाहता है। इसी प्रस्ताव को लेकर पर्यावरणीय विवाद प्रारंभ हुआ। उक्त विवाद को सुलझाने के लिये केन्द्र सरकार ने एक समिति गठित की। समिति की जांच रिपोर्ट के अनुसार साइलेण्ट वैली कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियों एवं वन्य प्राणियोंका आश्रय स्थल है। एम.जी.के. मेनन की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने बांध निर्माण को पर्यावरण की अपूरणीय क्षति बताकर बांध न बनाने की सिफारिश की सन् 1985 में साइलेण्ट–वैली को राष्ट्रीय उद्यान घोषित कर दिया गया। जन आंदोलन के कारण ही बहुमूल्य वर्षा वन दुर्लभ वनस्पति एवं जीव जन्तुओं को सुरक्षित किया जा सका।

अथवा

वर्तमान एवं भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये विभिन्न वस्तुओं के कारखानों में संख्यात्मक वृद्धि होती जा रही है। उद्योगों की स्थापना और विस्तार की प्रक्रिया को औद्योगीकरण कहा जाता है। इसमें एक ओर तो कृषि और वनभूमि का उपयोग होता है तथा दूसरी ओर भीमकाय मशीनों की भूख मिटाने के लिये खदानों से कच्चा माल भी उपलब्ध कराना होता है। इन कारखानों से वायुमण्डल में विषाक्त गैसें छोड़ी जाती हैं। इससे वायुमण्डलीय सन्तुलन बिगड़ता है और वायु प्रदूषण में वृद्धि होती है।

व्यर्थ पदार्थों को आसपास की जमीन पर खुले ढेर के रूप में छोड़ दिया जाता है, गन्दे पानी को नदियों में प्रवाहित किया जाता है। जो मानवीय स्वास्थ्य एवं पर्यावरण को सीधे प्रभावित

करते हैं। औद्योगीकरण वायु, जल, ध्वनि, भूमि एवं रासायनिक पदार्थ तथा रेडियोधर्मी प्रदूषण का केन्द्र बिन्दु है। भारत के कोलकाता महानगर क्षेत्र में दामोदर व हुगली नदियों के आसपास स्थित कारखानें एवं जूट मिलों से छोड़े गये अवशिष्ट पदार्थों ने इन नदियों के जल को विषाक्त कर दिया है। अतः एक ओर उद्योग जहाँ वरदान है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण के लिये एक अभिशाप भी है।

उ. 21. **अशोक का धम्म (धर्म)**—कलिंग युद्ध के उपरान्त अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। अपने लेखों में उसने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्तों का ही नहीं अपितु उसके कुछ नैतिक सिद्धान्तों काप्रचार किया। उसका **धम्म** सब धर्मों का सार था। अशोक का **धम्म** सर्वमंगलकारी है, जिसका मूल उद्देश्य प्राणी का मानसिक नैतिक तथा अध्यात्मिक उत्थान करना था। उसका धम्म अत्यन्त सरल तथा व्यावहारिक था।

प्राणिमात्र पर दया करना, सत्य बोलना, सबके कल्याण की कामना रखना, माता पिता गुरुजनों का आदर सम्मान करना, अशोक के धम्म के प्रधान लक्षण थे। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये विदेशों में प्रचारक भेजे। अशोक ने कई शिलालेख, लघु शिलालेख स्तम्भ लेख बनवाये। श्रीलंका में उसके पुत्र–पुत्री महेन्द्र व संघमित्रा प्रचार हेतु गये। उसने स्तूपों का निर्माण करवाया। धर्मलेख उत्कीर्ण कराये धर्म विभाग की स्थापना कर धर्म महापात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति की। अशोक के अधिकांश अभिलेखों में उसके लिये **'देवांनाप्रियो प्रियदर्शी राजा'** शब्द का उल्लेख मिलता है। जिसका अर्थ होता है **''देवताओं का प्रिय''**। उसने युद्ध के स्थान पर शांति की नीति अपनाई। उसने युद्धघोष को धर्मघोष में बदल दिया और बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया।

अथवा

चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन प्रबन्ध का ज्ञान हमें मेगस्थनीज की 'इंडिका' तथा कौटिल्य के **'अर्थशास्त्र'** से होता है उसके शासन की विशेषताएँ निम्नानुसार है—

1. सम्राट, साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी होता था। वह सेना न्याय व्यवहार का प्रधान होता था। वहप्रजा–हित के कार्यों में संलग्न रहता था।
2. राजा की सहायता हेतु मंत्रीपरिषद थी।
3. गुप्तचर, न्याय व्यवस्था एवं सैन्य संगठन सुदृढ़ था।
4. भूमिकर राज्य की आय का प्रमुख साधन था। उपज का 1/6 भाग कर रूप में लिया जाता था।
5. कर एकत्र करने वाला अधिकारी समाहर्ता कहलाता था।
6. सामान्य प्रांतों में विभाजित था। इनका शासन राजकुमार अथवा राजपरिवार के व्यक्तियों द्वारा होता था।

7. नगरों का प्रबन्ध करने हेतु छः समितियाँ होती थीं। प्रत्येक में पाँच–पाँच सदस्य होते थे।

8. सैन्य संगठन सुदृढ़ था। इसकी देखरेख छः समितियाँ करती थीं।

9. दण्ड विधार कठोर था।

10. कौटिल्य के अर्थशास्त्र से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में दो प्रकार के न्यायालय विद्यमान थे। पहला धर्मस्थलीय (दीवानी) न्यायालय। दूसरा कंटकशोधन (फौजदारी) न्यायालय।

उपरोक्त व्यवस्था के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य महान विजेता, महान कूटनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक धर्म परायण एवं प्रजा हितैषी शासक था।